''बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ''

JAYOTI VIDYAPEETH WOMEN'S UNIVERSITY, JAIPUR

Faculty of Education & Methodology

Faculty Name - JV'n GIRIJA SHARMA

(Assistant Professor)

Program - M.A III Sem

Course Name - निबंधकार-आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

Session No. & Name - 1.3 (निबंधकार-आचार्य रामचंद्र शुक्य का **साहित्यिक परिचय/ निबंध की विशेषता**)

PLANNING AND STARTED

(Basic Knowledge For Student)

आचार्य रामचंद्र शुक्ल का साहित्यिक परिचय

आचार्य शुक्ल जी का साहित्यिक जीवन काव्य रचना से प्रारंभ हुआ था और इस क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का अधिक उपयोग नहीं कर सकें। इन्होंने गद्य के क्षेत्र में ही अधिक कार्य किया और एक संपादक, निबंधकार, अनुवादक एवं आलोचक के रूप में अपूर्व ख्याति अर्जित की। शुक्ल जी ने 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' और 'आनन्द कादम्बिनी' जैसी सुविख्यात पत्रिकाओं का प्रभाव पूर्ण सम्पादन किया। इनके द्वारा 'हिंदी शब्द सागर' का संपादन भी किया गया। एक निबन्ध-लेखक के रूप में इन्होंने अपनी अद्वितीय प्रतिभा का परिचय दिया।

हिन्दी-साहित्य में आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी के द्वारा लिखे हुए साहित्यिक एवं मनोविकार संबंधी निबंधों का अपना विशिष्ट महत्व है। इन्होंने शैक्षिक, दार्शनिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक विषयों से संबंधित कृतियों का अनुवाद भी किया। एक आलोचक के रूप में भी शुक्ल जी ने हिंदी साहित्य की बहुमूल्य सेवा की। इन्होंने अपनी महत्वपूर्ण आलोचनात्मक कृतियों के द्वारा आलोचना के क्षेत्र में युगान्तर उपस्थित किया और एक नवीन आलोचना-पद्धति का विकास किया।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के निबंध की विशेषता

शुक्ल जी को सबसे अधिक ख्याति निबंधकार के रूप में मिली। 'काव्य में रहस्यवाद' और 'काव्य में अभिव्यंजनावाद' आदि साहित्यिक निबन्धों तथा करुणा, क्रोध, घृणा आदि मनोविकारों पर लिखे विचारात्मक निबंधों के आधार पर इन्हें हिंदी का सर्वश्रेष्ठ निबन्धकार कहा जा सकता है। हिंदी में विवेचनात्मक निबंधों को जन्म देने का श्रेय शुक्ल जी को ही प्राप्त है। समालोचना के तो ये सम्राट ही थे। 'विचार-वीथी' तथा 'चिंतामणि' (दो भाग) शुक्ल जी के उच्च कोटि के मनोवैज्ञानिक, विचारात्मक तथा साहित्यिक निबंधों के संकलन हैं। सूरदास, रस की मीमांसा एवं त्रिवेणी आदि इनके आलोचना ग्रन्थ हैं।

इसके अतिरिक्त आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी ने चिन्तामणी निबन्धों के अलावा कुछ अन्य निबंध भी लिखे हैं जिनमें मित्रता एवं अध्ययन आदि निबन्ध सामान्य विषयों पर लिखे गए हैं। मित्रता जीवन उपयोगी विषय पर लिखा गया उच्च कोटि का निबंध है जिसमें शुक्ल जी की लेखन गत विशेषताएं झलकती हैं।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल की भाषा शैली

आचार्य शुक्ल जी भाषा के विविध रूपों के धनी हैं। इनकी भाषा संस्कृत मिश्रित शुद्ध प्रौढ़ एवं परिमार्जित खड़ीबोली है। इनकी भाषा में शब्दों की प्रधानता है इन्होंने प्रचलित उर्दू, फारसी तथा अंग्रेजी भाषा के शब्दों को भी सहायता पूर्वक अपनाया है। भाषा को और अधिक गतिशील एवं प्रवाहपूर्ण बनाने के लिए मुहावरों एवं लोकोक्तियों का भी प्रचुर प्रयोग किया है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी की भाषा शैली सुगठित है इसमें कहीं कोई शब्द व्यर्थ का दिखाई नहीं देता है। इनकी कृतियों में वाक्य सुगुम्फित है। और कम से कम शब्दों में विचार एवं भाव भरना शुक्ल जी की शैलीगत विशेषता है। यत्र-तत्र सूत्रात्मकता भी है और साथ ही वे उस सूत्र की सफल एवं सरल व्याख्या भी करते हैं। शुक्ल जी विषम को सर्वत्र एवं रोचक बनाने का प्रयास करते हैं जगह-जगह पर तीखा व्यंग्य भी करते हैं। यदि सार रूप में कहें कि शुक्ल जी की भाषा प्रांजल एवं शैली सामासिकता लिए हुए हैं। वैसे तो इनकी शैली के तीन रूप प्रचलित हैं – आलोचनात्मक, गवेषणात्मक तथा भावात्मक आदि। इसके अलावा, विवेचनात्मक, तुलनात्मक एवं हास्य-व्यंग्यात्मक शैली भी देखने को मिलती हैं।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल की प्रमुख रचनाएं

शुक्ला जी एक प्रसिद्ध निबन्धकार, निष्पक्ष आलोचक, श्रेष्ठ इतिहासकार और सफल सम्पादक थे। इनकी रचनाओं का विवरण निम्नवत् है-

- **निबन्ध** ⇒ चिन्तामणी (भाग 1 व 2) तथा विचार-वीथी ।
- **आलोचना** ⇒ रस-मीमांसा, त्रिवेणी, सूरदास ।

- **इतिहास** ⇒ हिन्दी-साहित्य का इतिहास ।
- **सम्पादन** ⇒ जायसी ग्रन्थावली, तुलसी ग्रन्थावली, भ्रमरगीत सार, हिन्दी शब्द-सागर, आनन्द कादम्बिनी और काशी नागरी प्रचारिणी पत्रिका का कुशल सम्पादन किया।
- **कहानी** ⇒ ग्यारह वर्ष का समय ।
- **काव्य रचनाएं** ⇒ अभिमन्यु-वध, बुद्ध चरित ।
- **अनुदित रचनाएं (अनुवाद)** ⇒ मेगस्थनीज का भारतवर्षीय विवरण, आदर्श जीवन, कल्याण का आनन्द, विश्व प्रबन्ध आदि।

वर्ण्य विषय:- शुक्ल जी ने प्रायः साहित्यिक और मनोवैज्ञानिक निबंध लिखे हैं। साहित्यिक निबंधों के 3 भाग किए जा सकते हैं –

1. **सैद्धान्तिक आलोचनात्मक निबंध**- 'कविता क्या है'। 'काव्य में लोक मंगल की साधनावस्था', 'साधारणीकरण और व्यक्ति वैचियवाद', आदि निबंध सैध्दांतिक आलोचना के अंतर्गत आते हैं। आलोचना के साथ-साथ अन्वेषण और गवेषणा करने की प्रवृत्ति भी शुक्ल जी में पर्याप्त मात्रा में है। 'हिंदी साहित्य का इतिहास' उनकी इसी प्रवृत्ति का परिणाम है।
2. **व्यवहारिक आलोचनात्मक निबंध**- भारतेंदु हरिश्चंद्र, तुलसी का भक्ति मार्ग, मानस की धर्म भूमि आदि निबंध व्यावहारिक आलोचना के अंतर्गत आते हैं।

3. **मनोवैज्ञानिक निबंध**- मनोवैज्ञानिक निबंधों में करुणा, श्रध्दा, भक्ति, लज्जा, ग्लानि, क्रोध, लोभ, प्रीति आदि भावों तथा मनोविकारों पर लिखे गए निबंध आते हैं। शुक्ल जी के ये मनोवैज्ञानिक निबंध सर्वथा मौलिक हैं। उनकी भांति किसी भी अन्य लेखक ने उपर्युक्त विषयों पर इतनी प्रौढ़ता के साथ नहीं लिखा। शुक्ल जी के निबंधों में उनकी अभिरुचि, विचार धारा अध्ययन आदि का पूरा-पूरा समावेश है। वे लोकादर्श के पक्के समर्थक थे। इस समर्थन की छाप उनकी रचनाओं में सर्वत्र मिलती है।

भाषा:- शुक्ल जी की भाषा पर पूर्णाधिकार था। उनकी भाषा विषयानुरूप परिवर्तित होती है। गंभीर एवं सहितियिक विषयों पर लिखते समय भाषा शब्द प्रधान नहीं है। व्यवहारिक विषयों पर लिखते समय उनका सरल स्वरूप सम्मुख आया है। भाषा का सुगठित होना, व्यर्थ का एक भी शब्द न आना तथा मुहावरों, लोकोक्तियों और सूक्तियों का प्रयोग आपके लेखन की विशेषता है।

शुक्ल जी के गद्य-साहित्य की भाषा खड़ी बोली है और उसके प्रायः दो रूप मिलते हैं –

क्लिष्ट और जटिल:-गंभीर विषयों के वर्णन तथा आलोचनात्मक निबंधों के भाषा का क्लिष्ट रूप मिलता है। विषय की गंभीरता के कारण ऐसा होना स्वाभाविक भी है। गंभीर विषयों को व्यक्त करने के लिए जिस संयम और शक्ति की आवश्यकता होती है, वह पूर्णतः विद्यमान है। अतः इस प्रकार को भाषा क्लिष्ट और जटिल होते हुए भी स्पष्ट है। उसमें संस्कृत के तत्सम शब्दों की अधिकता है।

सरल और व्यवहारिक:-भाषा का सरल और व्यवहारिक रूप शुक्ल जी के मनोवैज्ञानिक निबंधों में मिलता है। इसमें हिंदी के प्रचलित शब्दों को ही अधिक ग्रहण किया गया है यथा स्थान उर्दू और अंग्रेज़ी के अतिप्रचलित शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। भाषा को अधिक सरल और व्यवहारिक बनाने के लिए शुक्ल जी ने तड़क-भड़क अटकल-पच्चू आदि ग्रामीण बोलचाल के शब्दों को भी अपनाया है। तथा नौ दिन चले अढ़ाई कोस, जिसकी लाठी उसकी भैंस, पेट फूलना, काटों पर चलना आदि कहावतों व मुहावरों का भी प्रयोग निस्संकोच होकर किया है। शुक्ल जी का दोनों प्रकार की भाषा पर पूर्ण अधिकार था। वह अत्यंत संभत, परिमार्जित, प्रौढ़ और व्याकरण की दृष्टि से पूर्ण निर्दोष है। उसमें रंचमात्र भी शिथिलता नहीं। शब्द मोतियों की भांति वाक्यों के सूत्र में गुंथे हुए हैं। एक भी शब्द निरर्थक नहीं, प्रत्येक शब्द का अपना पूर्ण महत्व है।